केला

विकार

शीतलन क्षति:

इसके लक्षणों में सतह मलिनकिरण , उप-एपिडर्मल ऊतकों जो काली भूरी धारियां प्रकट करती है , पकने में असफल तथा कई गंभीर मामलों में फलैश ब्राउनिंग। शीतलन क्षति की वजह से कुछ दिनों और कुछ घंटों के लिए केलों का तापमान 13 डिग्री सेल्सियस से नीचे चला जाता है जो कि फसल, परिपक्वैता और तापमान पर आधारित होता हैं।

त्वचा अपघर्षण:

त्वचचा अपघर्षण के परिणामस्वडरुप अन्य फलों की अपेक्षा स्कफलिंग या हैंडलिंग उपकरणों का सर्फिस अथवा शिपिंग बक्सेंच। जब सापेक्ष आर्द्रता की स्थिति (<90%) से कम होती है तो घिसें हुए क्षेत्रों से पानी की कमी त्विरित हो जाती है और उनका रंग भूरे से काले में बदल जाता हैं।

इम्पैक्ट ब्रुजिग:

केलों का तेजी से गिरना त्वचा की बिना क्षति के फलैस ब्राउनिंग का कारण हो सकता है।